B.A. 4th Semester Economics

International Trade: Concept and Importance

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का अर्थ व महत्व

अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार का आधार :– वस्तुओं एंव सेवाओं का विनिमय ही व्यापार है! अन्तराष्ट्रीय व्यापार की स्थिति में दो या दो सें अधिक देशों के साथ व्यापार होता है ! और अन्तक्षेत्रीय व्यापार की स्थिति में एक देश के प्रान्तो के बीच व्यापार होता है! अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सम्बन्ध में समय – समय पर अर्थशास्त्रियों एंव विचारकों ने अपने अलग – अलग विचार व्यक्त किये!

वणिकवादी दृष्टिकोण का प्रारम्भ 1130 ई0 के आस पास हुआ और 1690 तक विकास की चरम सीमा पहुँच गया! **वणिकवादी** जिसमें थामसमन का नाम प्रमुख था, मुख्यतः व्यापारी वर्ग के थे तथा अपने व्यापार के लाभ को अधिकतम करने के लिए इन्होने संरक्षण प्रधान व्यापारिक नीति को समर्थित किया और कहा कि किसी राष्ट्र के विकास का आधार सोना , चॉदी व अन्य बहुमूल्य वस्तुएं है ! इन विचारकों नें स्पष्ट कहा कि ''Not Goods but Gold is the wealth of Nations" इन विचारकों के अनुसार प्रत्येक देश को निर्यात बढाने तथा आयात घटाने का प्रयास करना चाहिए जिससे देश में सोने का भण्डार बढे और देश समृद्ध हों!

प्राकृतिक अर्थशास्त्रियों जिसमें थामस क्वेने का नाम प्रमुख है ! जिन्होने स्वतन्त्र व्यापारिक नीति का समर्थन किया ! अर्थात निर्यौत एंव आयातों पर किसी प्रकार का कोई प्रतिबन्ध न हो , व्यक्त किया !

→ **संरक्षण का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रेडरिकलिस्ट ने किया**

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को विभिन्न देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के आदान–प्रदान या व्यापार के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार का व्यापार विश्व अर्थव्यवस्था में योगदान देता है और उसे बढ़ाता है। सबसे अधिक कारोबार वाली वस्तुएं टेलीविजन सेट, कपड़े, मशीनरी, पूंजीगत सामान, भोजन, कच्चा माल आदि हैं। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में असाधारण रूप से वृद्धि हुई है, जिसमें विदेशी परिवहन, यात्रा और पर्यटन, बैंकिंग, भंडारण, संचार, वितरण और विज्ञापन जैसी सेवाएँ शामिल हैं। अन्य समान रूप से महत्वपूर्ण विकास विदेशी निवेश में वृद्धि और एक अंतरराष्ट्रीय देश में विदेशी वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि है। ये विदेशी निवेश और उत्पादन कंपनियों को अपने अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों के करीब आने में मदद करते हैं, इस प्रकार उन्हें बहुत कम दर पर सामान और सेवाएं प्रदान करते हैं।

उल्लिखित सभी गतिविधियाँ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के भाग हैं। यह कहकर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और उत्पादन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के दो पहलू हैं, जो दुनिया भर में दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण

(1) उत्पादन – हर एक देश के लिए सस्ती लागत पर समान उत्पादन करना संभव नहीं है। इसीलिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को ध्यान में रखा जाता है।

(2) उत्पादन के कारक – उत्पादन के कारकों में श्रम, पूंजी और वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए कच्चा माल शामिल है जो विभिन्न देशों में अलग–अलग दरों पर उपलब्ध हैं।

(3) उत्पादन की लागत – प्रत्येक देश केवल उन्हीं वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना लाभप्रद समझता है जिनका उत्पादन कुशलतापूर्वक किया जा सकता है। बाकी गतिविधियाँ अन्य देशों को कम लागत पर सौंपी जाती हैं।

(4) संसाधन वितरण – कई बार कंपनियों को प्राकृतिक संसाधनों की सीमा के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ता है। देश में संसाधनों का असमान वितरण है।

(5) उदाहरण– विभिन्न देश अलग–अलग क्षेत्रों में विशिष्ट हैं, जैसे भारत में, महाराष्ट्र कपड़ा उद्योग में, पश्चिम बंगाल जूट उत्पादों में, हरियाणा और पंजाब खाद्य उत्पादों में, केरल मसालों में शामिल है। अन्य देशों के लिए भी यही वर्गीकृत किया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का महत्व–

विभिन्न देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एक आवश्यक कारक है जो जीवन स्तर में वृद्धि, रोजगार सृजन और उपभोक्ताओं को विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का आनंद लेने के लिए सशक्त बनाने के लिए जिम्मेदार है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रभावित करने वाले कुछ अन्य महत्वपूर्ण कारक हैं।

- **कच्चे माल का उपयोग**– कुछ देशों को प्राकृतिक रूप से कच्चे माल की प्रचुरता प्राप्त होती है, जैसे कतर तेल के लिए, आइसलैंड धातु और मछली के लिए, आदि। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के बिना, इन देशों को अपने प्राकृतिक संसाधनों या कच्चे माल से कभी लाभ नहीं होगा।
- **उपभोक्ताओं के लिए अधिक विकल्प**– अधिक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के परिणामस्वरूप उत्पादों के अधिक विकल्प उपलब्ध होते हैं।
- **विशेषज्ञता और पैमाने की मितव्ययिता** – अधिक दक्षता इसका मतलब यह है कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि किसी देश की विशेषज्ञता किसमें है, और आवश्यक बात यह है कि विशेषज्ञता हासिल की जाए जो कंपनियों को ऐसा लाभ कमाने की अनुमति देती है जो अन्य कारकों से कहीं अधिक है।
- **वैश्विक वृद्धि और आर्थिक विकास**– अंतर्राष्ट्रीय व्यापार किसी देश की आर्थिक वृद्धि को प्रभावित करता है। इस वृद्धि से गरीबी के स्तर में भी कमी आती है।